

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 5: दुर्वासा का उद्धार

17 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



हाथ जोड़े राजा अम्बरीष जलते हुए सुदर्शन चक्र से प्रार्थना करते हैं — अपने लिए नहीं, अपितु उसी ऋषि के लिए जिसने उन्हें नष्ट करना चाह था — कि ब्राह्मण दुर्वासा को अभयदान मिले।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह पाँचवाँ अध्याय पिछले अध्याय में आरम्भ हुए दुर्वासा-प्रसंग का मर्मस्पर्शी समापन करता है, जब भगवान् के चक्र द्वारा खदेड़े गए विनम्र ऋषि राजा अम्बरीष से क्षमा माँगने लौटते हैं — और राजा का उत्तर शुद्ध भक्ति के शिखर-सौन्दर्य को प्रकट करता है।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 5 (पंचम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: दुर्वासा का उद्धार और अम्बरीष की महिमा
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: राजा अम्बरीष का राज्य एवं राजसभा
- केन्द्रीय विषय: ऋषि दुर्वासा को बचाने हेतु राजा अम्बरीष की सुदर्शन चक्र से प्रार्थना; चक्र का शान्त होना; दुर्वासा द्वारा भक्त की स्तुति; राजा का आतिथ्य; एक पूरा वर्ष बीत जाने का रहस्योद्घाटन; और अम्बरीष का अन्तिम मोक्ष
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 1-28
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

सुदर्शन से अम्बरीष की प्रार्थना

भगवान् के आदेश से और अब भी चक्र से जलते हुए दुर्वासा अम्बरीष के पास लौटे और राजा के चरण पकड़ लिए। इतने महान् ऋषि को अपने चरणों में नत देखकर अत्यन्त दुःखी और लज्जित होकर करुणामय राजा सुदर्शन की स्तुति करने लगे, प्रार्थना करते हुए कि वह ब्राह्मण से अपना क्रोध हटा ले। उन्होंने चक्र को सृष्टि के समस्त तत्त्वों एवं शक्तियों में विद्यमान भगवान् की उपस्थिति के रूप में सम्बोधित किया।

भगवान् ने स्वयं दुर्वासा की व्यथा को शान्त क्यों नहीं किया, अपितु ऋषि के व्याकुल होकर पहुँचने पर भी उन्हें उसी राजा के पास वापस भेजा जिसका उन्होंने अपराध किया था (श्लोक 1-2), इसका एक गूढ़ कारण है। किसी भक्त के विरुद्ध किया गया अपराध केवल भगवान् के क्षमा करने की बात नहीं होती; भगवान् स्वयं को, प्रेमवश, अपने ही सेवकों की कृपा के अधीन रखते हैं, और केवल आहत भक्त का हृदय ही ऐसे ऋण को वास्तव में मुक्त कर सकता है। यही कारण है कि दुर्वासा की सारी शक्ति और उनकी दूर-दूर की यात्रा उन्हें मुक्त न कर सकी, जबकि अम्बरीष की एक ही निष्काम प्रार्थना ने उन्हें मुक्त कर दिया — मानो भगवान् ने यह सम्पूर्ण प्रसंग इसलिए रचा हो कि संसार देख सके कि एक महान् ऋषि की सुरक्षा भी उसकी अपनी शक्ति में नहीं, अपितु भगवान् के भक्त की सद्भावना में निहित है।

अम्बरीष उवाच

त्वमग्निर्भगवान् सूर्यस्त्वं सोमो ज्योतिषां पतिः ।

त्वमापस्त्वं क्षितिर्व्योम वायुर्मात्रेन्द्रियाणि च ॥ ३ ॥

*ambariṣa uvāca tvam agnir bhagavān sūryas tvaṁ somo jyotiṣāṁ patiḥ tvam āpas tvaṁ kṣitir
vyoma vāyur mātrendriyāṇi ca*

अर्थ: अम्बरीष ने प्रार्थना की: “आप अग्निदेव एवं तेजस्वी सूर्य हैं; आप चन्द्रमा, ज्योतियों के स्वामी हैं; आप जल, पृथ्वी और आकाश हैं, वायु, इन्द्रियों के विषय और स्वयं इन्द्रियाँ भी हैं।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 3)

उन्होंने चक्र की स्तुति साक्षात् धर्म, लोकों के रक्षक और परम पुरुष की अलौकिक ज्योति के रूप में की, और फिर अपनी याचना स्पष्ट कर दी: कि उनके वंश के कल्याण हेतु, और उसे ब्रह्महत्या के पाप से बचाने हेतु, सुदर्शन दुर्वासा को अभयदान दे। यदि उनके कुल ने कभी ब्राह्मणों को देवता मानकर आदर दिया है, और यदि भगवान् सब प्राणियों को अपना ही स्वरूप देखने के कारण उन पर प्रसन्न हैं, तो यह ब्राह्मण अपने कष्ट से मुक्त हो जाए।

चक्र का शान्त होना

भगवान् का चक्र, जो दुर्वासा को चारों ओर से जला रहा था, राजा की प्रार्थना पर शान्त हो गया।

श्रीशुक उवाच

इति संस्तुवतो राज्ञो विष्णुचक्रं सुदर्शनम् ।

अशाम्यत् सर्वतो विप्रं प्रदहद् राजयाञ्चया ॥ १२ ॥

śrī-śuka uvāca iti saṁstuvato rājño viṣṇu-cakram sudarśanam aśāmyat sarvato vipraṁ pradahad rāja-yācñayā

अर्थ: शुकदेव ने कहा: राजा के इस प्रकार स्तुति करने पर भगवान् विष्णु का सुदर्शन चक्र, जो ब्राह्मण को चारों ओर से जला रहा था, राजा की याचना से शान्त हो गया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 12)



अम्बरीष की सच्ची प्रार्थना पर जलता हुआ सुदर्शन चक्र शान्त होकर अपनी अग्नि समेट लेता है, और ऋषि दुर्वासा उसकी जलन से मुक्त होकर अन्ततः राहत अनुभव करते हैं (श्लोक 12-13)।

दुर्वासा द्वारा भक्त को स्तुति

अस्त्र की अग्नि से मुक्त होकर दुर्वासा अभिभूत हो उठे — रोष से नहीं, अपितु उस राजा के प्रति विस्मय से जिसने अपने अपराधी के ही कल्याण के लिए प्रयत्न किया। उन्होंने कहा कि आज उन्होंने भगवान् के भक्तों की महिमा का दर्शन किया है।

दुष्करः को नु साधूनां दुस्त्यजो वा महात्मनाम् ।

यैः संगृहीतो भगवान् सात्वतामृषभो हरिः ॥ १५ ॥

duṣkaraḥ ko nu sādḥūnām dustyajo vā mahātmanām yaiḥ saṅgrīto bhagavān sātvatām ṛṣabho hariḥ

अर्थ: “साधुओं के लिए क्या करना कठिन है, और महात्माओं के लिए क्या त्यागना दुष्कर है, जिन्होंने भक्तों के स्वामी श्री हरि को प्रेमपूर्वक अपने हृदय में धारण कर रखा है?” (नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 15)



चक्र से मुक्त होकर ऋषि दुर्वासा राजा अम्बरीष की स्तुति करते हैं, उस भक्त की महानता पर विस्मित होते हुए जिसने अपने अपराधी के भी कल्याण की कामना की (श्लोक 14-17)।

उन्होंने राजा की प्रशंसा की कि उन्होंने उनके अपराध की उपेक्षा कर उनके प्राण बचाए, और उन्हें हार्दिक आशीर्वाद दिया, यह घोषित करते हुए कि भगवान् के सेवकों को कुछ भी अप्राप्य नहीं, जिनके नाम-श्रवण मात्र से मनुष्य पवित्र हो जाता है।

राजा का अपने अतिथि को भोजन कराना

इस समस्त काल में अम्बरीष ने एक भी कौर नहीं लिया था, ऋषि के लौटने की आशा में प्रतीक्षारत। अब दुर्वासा के चरण पकड़कर उन्हें प्रसन्न करके उन्होंने भरपूर भोजन कराया। हृदय से तृप्त होकर ऋषि ने कृपापूर्वक राजा को अपना भोजन करने को कहा, और स्वयं को अत्यन्त कृतज्ञ बताया।

प्रीतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि तव भागवतस्य वै ।
दर्शनस्पर्शनालापैरातिथ्येनात्ममेधसा ॥ २० ॥

prīto 'smy anugṛhīto 'smi tava bhāgavatasya vai darśana-sparsānālāpair ātithyenātma-medhasā

अर्थ: “मैं आप भगवद्भक्त से प्रसन्न और अत्यन्त कृतज्ञ हूँ — आपके दर्शन, स्पर्श और वार्तालाप से, और परम आत्मा में लगे मन से किए गए आपके आतिथ्य से।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 20)



ऋषि के लौटने की आशा में प्रतीक्षा करते रहे राजा अम्बरीष अपने अतिथि दुर्वासा को प्रेमपूर्वक एवं श्रद्धा से भोजन कराते हैं, और तत्पश्चात् ही स्वयं भोजन करते हैं (श्लोक 18-20)।

उन्होंने भविष्यवाणी की कि देवांगनाएँ राजा के इस निर्दोष कर्म का गान करती रहेंगी, और पृथ्वी स्वयं उनकी पवित्र महिमा की घोषणा करेगी।

केवल जल पर बीता एक पूरा वर्ष

तब राजा के धैर्य का एक चमत्कार प्रकट हुआ। दुर्वासा, आज्ञा लेकर, आकाश-मार्ग से ब्रह्मलोक को उठ गए — और तभी यह ज्ञात हुआ कि उनके भागने से अब तक एक पूरा वर्ष बीत चुका था; इस समस्त काल में, ऋषि के लौटने की अभिलाषा में, अम्बरीष केवल जल पर ही रहे थे।

संवत्सरोऽत्यगात् तावद् यावता नागतो गतः ।
मुनिस्तद्दर्शनाकाङ्क्षो राजाभक्षो बभूव ह ॥ २३ ॥

saṁvatsaro 'tyagāt tāvad yāvatā nāgato gataḥ munis tad-darśanākāṅkṣo rājāb-bhakṣo babhūva ha

अर्थ: गए हुए ऋषि के लौटने में एक पूरा वर्ष बीत गया; और राजा, उनके दर्शन की अभिलाषा में, इस समस्त काल केवल जल पर ही रहे।
(नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 23)



अपने प्राण बचने और हृदय के विनम्र हो जाने पर, प्रसन्न ऋषि दुर्वासा राजा से आज्ञा लेकर आकाश-मार्ग से ब्रह्मा के लोक की ओर उठते हैं (श्लोक 22)।

दुर्वासा के जाने पर अम्बरीष ने वह भोजन ग्रहण किया जो ऋषि के भोजन कर लेने से अत्यन्त पवित्र हो गया था। ऋषि के संकट एवं उद्धार पर, और अपने ही एक वर्ष के अटल उपवास पर विचार करते हुए, उन्होंने इस समस्त प्रसंग को परमात्मा की महिमा माना, अपना कोई श्रेय नहीं लिया।

अम्बरीष का अन्तिम मोक्ष

ऐसे गुणों से सम्पन्न अम्बरीष अपने समस्त कर्मों द्वारा भगवान् वासुदेव की भक्ति करते रहे, ब्रह्मा के उच्च पद को भी भक्ति के समक्ष तुच्छ मानते हुए। अन्ततः, अपने ही समान स्वभाव वाले पुत्रों को राज्य सौंपकर, बुद्धिमान् राजा वन को चले गए, और भगवान् वासुदेव में मन लगाकर उन्होंने जन्म-मृत्यु के अपने चक्र का अन्त कर दिया।

श्रीशुक उवाच

अथाम्बरीषस्तनयेषु राज्यं

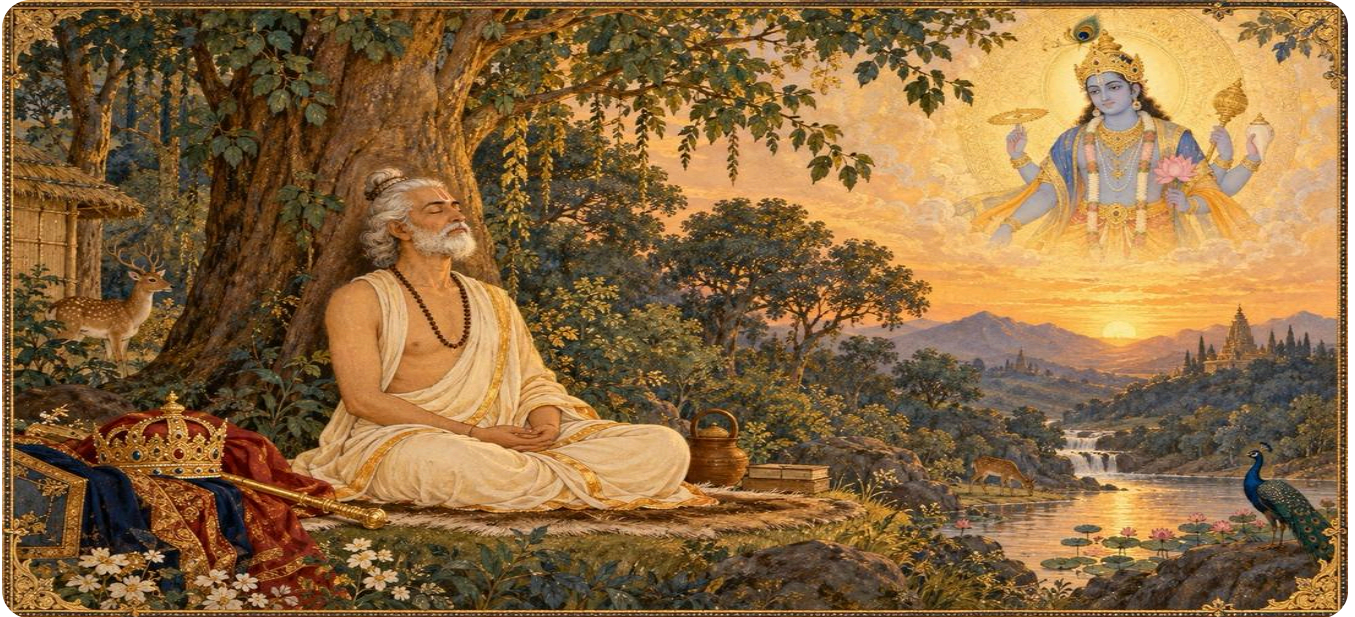
समानशीलेषु विसृज्य धीरः ।

वनं विवेशात्मनि वासुदेवे

मनो दधद् ध्वस्तगुणप्रवाहः ॥ २६ ॥

*śrī-śuka uvāca athāmbarīṣas tanayeṣu rājyaṁ samāna-śīleṣu viśṛjya dhīraḥ vanaṁ viveśātmani
vāsudeve mano dadhad dhvasta-guṇa-pravāhaḥ*

अर्थ: तब धीर अम्बरीष, अपने समान स्वभाव वाले पुत्रों को राज्य सौंपकर, वन में प्रवेश कर गए और भगवान् वासुदेव में मन लगाकर उन्होंने प्रकृति के गुणों के प्रवाह — जन्म-मृत्यु के चक्र — का अन्त कर दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 5, श्लोक 26)



अपना राज्य योग्य पुत्रों को सौंपकर वृद्ध अम्बरीष वन को चले जाते हैं, उनका मन पूर्णतः भगवान् वासुदेव में स्थित है, और वे मोक्ष प्राप्त करते हैं (श्लोक 26)।

अध्याय इस आश्वासन के साथ समाप्त होता है कि जो भी सम्राट् अम्बरीष की इस पवित्र कथा का पाठ एवं मनन करता है, वह निश्चय ही भगवान् का भक्त बन जाता है।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सच्चा भक्त अपने शत्रु का भी कल्याण चाहता है। निर्दोष सिद्ध होने पर अम्बरीष का पहला भाव विजय नहीं, अपितु करुणा है; वे पूरे हृदय से उसी ऋषि के अभयदान की प्रार्थना करते हैं जिसने उन्हें मारना चाहा (श्लोक 3-11)।
2. भगवान् की शक्ति विनम्र की प्रार्थना का उत्तर देती है। ब्रह्मा और शिव के लिए भी अजेय सुदर्शन एक प्रेमी भक्त की याचना पर शान्त हो जाता है (श्लोक 12)।
3. भक्त की महानता महान् को भी विनम्र कर देती है। भयंकर दुर्वासा बल से नहीं, प्रेम से जीते जाते हैं, और स्वयं भक्त के स्तुति-गायक बन जाते हैं (श्लोक 14-17)।
4. भक्ति धैर्यपूर्ण, निःस्वार्थ सेवा में व्यक्त होती है। अम्बरीष अपने अतिथि के लौटने की आशा में एक पूरा वर्ष उपवास करते हैं, फिर पहले उसे भोजन कराते हैं और कोई श्रेय नहीं लेते, सब कुछ भगवान् की महिमा मानते हुए (श्लोक 18-24)।
5. भक्ति का लक्ष्य स्वयं भगवान् हैं। अम्बरीष ब्रह्मा के सिंहासन को भी तुच्छ गिनते हैं, और अपना जीवन वासुदेव में लीन होकर, जन्म-मृत्यु से मुक्त होकर समाप्त करते हैं (श्लोक 25-27)।

एक श्रद्धा-चिन्तन

इस अध्याय का गहनतम स्वर जलते हुए चक्र से नहीं, अपितु राजा की प्रार्थना से उठता है। अम्बरीष ने कोई अपराध नहीं किया; यह समस्त संकट उन पर थोपा गया था। फिर भी, जब अपराधी ऋषि उनके चरणों में गिरते हैं, तब राजा उन्हें दण्डित होते देख प्रसन्न नहीं होते — वे व्यथित होते हैं, और उनके उद्धार की याचना करते हैं। यह उस हृदय की सुगन्ध है जिसने भगवान् को सचमुच अपना लिया है: वह अब किसी शत्रु को धारण ही नहीं कर सकता। दुर्वासा भय में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाकर भी शरण न पा सके; अम्बरीष, अपने ही नगर में अविचल खड़े, सदा सुरक्षित रहे, क्योंकि वे अपने लिए कुछ चाहते ही न थे। अपने वर्षभर के उपवास का उल्लेख तक वे किसी से नहीं करते; वह मानो संयोगवश प्रकट होता है, और वे उसे अपनी उपलब्धि नहीं, भगवान् का कार्य मानते हैं। यहाँ हमें उस भक्त का चित्र मिलता है जिसे हम अपने जीवन में धारण कर सकते हैं: वहाँ कोमल जहाँ हम क्रुद्ध होते, वहाँ उदार जहाँ हम अपना अधिकार माँगते, और इस शान्त निश्चय से भरा कि हर भलाई का स्रोत हमारा प्रयास नहीं, भगवान् हैं।

एक दैनिक श्रद्धा-अभ्यास

आज, अम्बरीष की भावना में, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें जिसने आपके साथ अन्याय किया या आपको कष्ट दिया — कोई अनिच्छुक शब्द नहीं, अपितु उसके कल्याण की सच्ची कामना, भगवान् के समक्ष रखी हुई। ऐसा करते हुए मृदुता से “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का जप करें। यदि सम्भव हो, तो बिना धन्यवाद की अपेक्षा किए एक छोटी-सी धैर्यपूर्ण सेवा जोड़ें, और उसके पूर्ण होने पर उसे भी चुपचाप भगवान् को अर्पित कर दें, कोई श्रेय न लेते हुए, इस विश्वास से कि आपके जीवन की हर भलाई केवल उन्हीं से प्रवाहित होती है।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का पाँचवाँ अध्याय अम्बरीष की कथा को इस सत्य को प्रकट करते हुए पूर्ण करता है कि शुद्ध भक्ति वस्तुतः क्या है: एक ऐसा हृदय जो भगवान् से इतना भरा है कि वह किसी शत्रु को धारण ही नहीं कर सकता, इतना कोमल कि स्वयं भगवान् का अजेय अस्त्र भी किसी अन्य शक्ति या विरोध के आगे झुकने से पहले उसी के आगे झुक जाता है। दुर्वासा इस सत्य को बाहर से, विनम्र होकर जानते हैं; अम्बरीष इसे भीतर से, अपने लिए कुछ भी न चाहते हुए, जीते हैं। हम भी वही सीखें जो वे हमें दिखाते हैं: कि केवल भगवान् की शरण — न कि सिंहासन, स्वर्ग अथवा प्रतिशोध — भक्त का सच्चा और अन्तिम विश्राम है। जो भी इस पवित्र कथा का मनन करता है, उसे ऐसा ही भक्त बनने का वचन दिया गया है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), नवम स्कन्ध, पंचम अध्याय, पृष्ठ 18–21।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बद्धता या उसके अनुमोदन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-5-deliverance-of-durvasa-glory-of-ambarisha-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

